विलेपनम्; Bhatt. 16.38.: पेक्ष्याम्य् अरीन्. — *Caus.* id. Mah. 1.3223.: पुनस् तम् पेषयित्वा· (Lat. *pinso*; lith. *pes-tà* pistrinum, *Stampfmühle*; gr. πτίσσω pro πίσσω, πίτυρον.)

c. उत् *i. q. simpl.* Mah. 3.457.

c. निस् (निष्पिष्, gr. 79.) *id.* H. 4.54.: निष्पिपेषै 'नम् बलाद् भूमौ; Dr. 9.3.: तम् भीमो निष्पिपेष महीतले; Mah. 4.465.: दन्तैर् दन्तान् निष्पिपेष·

c. निस् praef. वि *id.* H. 4.35. Fricare. Ram. Schl. II. 35.1.: पाणिम् पाणौ विनिष्पिष्य·

c. प्रति *id.* प्रत्यपिंषत् pro प्रत्यपिनट्. Mah. 1.2004.4.361.

c. सम् *id.* Ram. Schl. I. 45.48.

2. **पिष्** 10. P. (हिंसायाम् K.) laedere, ferire, occidere.

3. **पिष्** 1. P. (गतौ K.) ire, se movere. *Cf.* पिस्.

1. **पिस्** 1. P. (गत्याम्) ire, se movere.

2. **पिस्** 10. P. (निकेतनहिंसाबलदानेषु) habitare; laedere, ferire; robustum esse; dare.

पी 4. A. (e पा, attenuato आ in ई) bibere. Mah. 3.13611.: सो ऽपीयत वारि· (V. पा·)

पीठ *m. n.* 1) sella, sedile. Ragh. 17.10. 2) scabellum. Ragh. 4.84.6.15.

पीठा *f. id.*

पीड् 10. P. 1) premere. R. Schl. II. 50.27.: भुजाभ्याम् वृत्तपीनाभ्याम् पीडयन्; Hit. 62.8.: असकृत् पीडितं स्नानवस्त्रम् मुञ्चेद् बहु 'दकम्· 2) ferire, percutere, icere. A. 10.39.: शरवर्षैस् तान्... ना 'शक्नुवम् पीडयितुम्· 3) vexare, contristare, dolore afficere. Br. 3.14.: पीडिता 'हम् भविष्यामि; N. 9.11.: क्षुधया पीड्यमानः; Man. 5.50.: व्याधिभिश्च न पीड्यन्ते· (*Cf.* पिहु·)

c. अभि vexare. N. 12.90.: भर्तृशोकाभिपीडिता·

c. अव premere, tundere. Mah. 1.6292.: ततो ऽस्य जानुना पृष्ठम् अवपीड्य बलात्·

c. आ vexare. Hit. ed. Ser. p. 116.: आपीडयन् बलं शत्रोः· — आपीडित coronatus (N. 12.102.) ab आपीड s. इत·

c. उप 1) vexare. Man. 8.67.: क्षुत्तृष्णोपपीडितः· 2) vastare. Man. 7.195.: राष्ट्रञ्चा 'स्यो 'पपीडयेत् (Schol. उत्सादयेत्).

c. नि 1) premere. R. Schl. I. 44.1.: अङ्गुष्ठाग्रनिपीडितङ् कृत्वा महीतलम्; Ragh. 2.23.: गुरोः सदारस्य निपीड्य पादौ· 2) vexare. Mah. 2.6106.; Man. 7.23.

c. नि praef. अभि *id.* Mah. 3.14759.: करङ् करेण 'भिनिपीड्य; 1.7009.: कन्दर्पबाणाभिनिपीडिताङ्गः·

c. नि praef. उप pulsare, percutere, icere. *trop.* दैवेनोपनिपीडितः Mah. 2.2498.

c. परि 1) amplecti. Hit. 65.13.: बाहुभ्याम् परिपीडितः· 2) ferire, percutere, icere. A. 10.39.: ते तु माम् पर्यपीडयन् (शरैः). 3) vexare. R. Schl. II. 10.38.

c. प्र vexare. H. 1.19.: श्रमेण ... तृष्णयाच प्रपीडिताः·

c. सम् ferire, percutere, icere. Mah. 3.12121.

पीडा *f.* (r. पीड् s. आ) tormentum, cruciatus. Bh. 17.19.

पीत v. पा·

पीन v. प्यै·

पील् 1. P. (प्रतिष्टम्भे K. रोधे V.) stabilire, immobilem reddere; arcere.

पीलु *m.* elephantus. Am. (Pers. پیل *pîl.*)

पीव् 1. P. (स्थौल्ये) magnum, crassum, pinguem esse. *Cf.* प्यै, मीव्·

पीवर (r. प्यै s. वर) crassus, turgidus. In. 5.10. (V. प्यै et cf. πιαρός.)

पुंश्चली *f.* (e पुंस् mas et चल iens in *fem.*) meretrix.

1. **पुंस्** 10. P. (मर्दे) conterere. Cf. 1. पिष्.

2. **पुंस्** (casus fortes, vocativo sing. पुमन् excepto, format e पुमांस्, unde nom. पुमान्, acc. पुमांसम्, v. gr. 238.) mas, vir. Bh. 2.62.71. (Huc traxerim lat. *mas, mar-is* pro *masis, mas-culus*, abjectâ syllabâ initiali *pu*, ad quam lat. *pu* τοῦ *pu-bes* referri posset, quod fortasse e *pumes*, mutato *m* in mediam ejusdem organi, sicut in gr. βροτός e μροτός; fortasse etiam nostrum *Mann*; germ. vet. *man*, gen. *mannes*, quod per assimil. e *manses* explicari posset, cum पुमांस् cohaeret, nisi pertinet ad मानव·)